

— caus. व्यथयति Vop. 18, 22. 1) *schwanken* —, *fähig machen*, zu Fall bringen; abbringen von (abl.): मा वृत्तिं व्यथयिष्ये AV. 5, 7, 2. 13, 1, 31. क्षमिष्ये व्यथया मन्युम् RV. 6, 25, 2. सत्पथात् BHATT. 10, 36. pass. in unruhige Bewegung gesetzt werden: व्यथ्यते ग्रन्थिः Suçr. 1, 286, 19. — 2) aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen, aufregen; in Schmerz versetzen BHAG. 2, 15. MBH. 3, 16418. 7, 335. तामिवाधी न चानधी व्यथयति Spr. 4886. R. 5, 54, 1. KHAND. 67. DAÇAK. 77, 12. BHATT. 15, 86. Spr. (II) 1637 (Gegens. नन्दय). विनाशो लब्धस्य व्यथयति त्री न वनुदयः 3045. Git. 2, 20 (Gegens. सुख्य). 10, 12. व्यथयसी मनो मम MBH. 2, 1814. Māñ. 162, 12. व्यथयति परं वेतो मनोरथशतैर्धनाः Spr. 2909. मन्मथायुधसंपातव्यथयमानमति BHATT. 4, 30.

— intens. वाव्यथ्यते P. 7, 4, 68, Schol.

— परि aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen: यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति PRAÇOP. 6, 6.

— प्र 1) *erleben*: दृष्ट्वै हि परानात्रो मनः प्रव्यथीव मे MBH. 4, 1242. aus seiner Ruhe —, aus der Fassung kommen, versagen: तदेव प्रव्यथते ऽस्य शत्रवो विनमति च 5, 4564. 14, 271. प्रव्यथ्ये 7, 1370. R. 2, 18, 41. प्राव्यथत् MBH. 3, 14334. प्रव्यथ्युः 6, 2704. 10, 363. HARIV. 12542. प्रव्यथित partic. BHAG. 11, 20. 23. fg. 45. MBH. 1, 7861. 2, 1436. 6, 1921. 2374. 12, 8112. HARIV. 8174. R. 3, 15, 12. 4, 51, 4. 5, 76, 14. 101, 1. 7, 28, 15. Bha. P. 10, 62, 30. MĀK. P. 74, 22. DAÇAK. 83, 12. — 2) *ausser Fassung bringen*, in Schmerz versetzen: न त्वां प्रव्यथते (richtiger प्रव्यथयेद् ed. Bomb. und SCHL.) दुःखं सुखं वापि प्रकर्षयेत् R. GOR. 2, 114, 28. — caus. dass. MBH. 4, 2112. HARIV. 2482. R. 2, 106, 2.

— संप्र, partic. °व्यथित ausser Fassung gekommen, in grosse Aufregung versetzt: °चेतना R. 1, 38, 16.

— वि, partic. °व्यथित dass. Spr. (II) 1604. MBH. 7, 1272 (°तिव्यथित ed. Bomb.).

— सम् aus der Fassung kommen, versagen: संविद्यथुः MBH. 6, 789. व्यथ स. जल°.

व्यथक (vom caus. von व्यथ्) adj. in Schmerz versetzend H. 501. HAL. 2, 216. वचस् Kī. 2, 4.

व्यथन (von व्यथ् simpl. und caus.) 1) adj. in grosse Aufregung versetzend: कर्मन् MBH. 3, 16414. — 2) n. a) das Schwanken, Nichtfeststehen u. a. w. P. 5, 4, 16. — b) Abänderung, Entstellung (eines Lautes) RV. PAIR. 14, 1. — c) Empfindung eines Schmerzes Suçr. 1, 269, 2. 2, 313, 12. — d) das Beröthen eines Schmerzes Dhīrup. 28, 1. — Vgl. घति°, निर्व्यथन.

व्यथयितृ (VOM CAUS. von व्यथ्) nom. ag. Jmd (acc.) in Schmerz versetzend, hart mitnehmend: (अधिकरणिकः) क्लीबान्पालविता शठान्व्यथयिता Māñ. 137, 25.

व्यथ्या (von व्यथ्) f. Vop. 26, 192. 1) das Fehlgelien, Misslingen: अस्त्वमव्यथं चैव — विप्राप्ति उक्तम् Jñ. 1, 215 (keinen Schmerz verursachend Br.); vgl. M. 7, 84 = Spr. (II) 3493. — 2) Schaden, Verlust; Ungemach ÇAT. Br. 2, 5, 30. Suçr. 4, 7, 17. VARĀH. Bha. 5, 89, 5. — 3) ein Gefühl peinlicher Unruhe, Unbehagen, Pein, Leid, Weh, Schmerz AK. 1, 2, 3, 3. H. 1370. HAL. 3, 4. BHAG. 11, 49. मा च ते शम्बरस्येयं पत्नीति भवतु व्यथा HARIV. 9475. सख्यक्ता दारुणैरपि क्रियाविशेषैर्न व्यथा भवति Suçr. 1, 86, 10. व्यथया दीनः R. 2, 22, 1. व्यथासुर 51, 21. RĪGĀ-TAN. 5, 442.

व्यथाक्रास KATĪA. 13, 109. व्यथाकुल PĀNĀT. 215, 19. मरणे नास्ति मे व्यथा R. 2, 64, 50. UTTAR. 6, 3 (9, 6). KATĪA. 22, 32. भी. शोक, व्यथा R. GOR. 2, 53, 2. 5, 33, 41. गुरुव्यथ adj. VIKR. 50. तीव्रीभवद्यथ adj. RĪGĀ-TAN. 6, 99. व्यथो वक्ति MBH. 1, 6145. अथय्य तदयाम् RAGH. 3, 61. अलघयत्स तदयाम् 11, 62. गतव्यथ adj. MBH. 1, 7711. 3, 1786. Bha. P. 3, 22, 24. वीतव्यथ adj. 6, 11, 12. महीषधिरुतव्यथ adj. (कृत st. कृत ed. Calc.) RAGH. 12, 78. स कृच्छ्रकालं संप्राप्य व्यथा नैवेति कर्हिचित् Spr. 4557. ईरुदुःखमपे भुक्ता शास्यत्पन्यव्यथा ध्रुवम् RĪGĀ-TAN. 5, 198. अनुभाव्य व्यथाम् 4, 654. प्रियाविरुद्धो त्वं तु व्यथा मानुषः VIKR. 110. अशानो व क्रिदात्समुद्रवा । व्यथा विनाशमभ्यति Spr. (II) 1532. अकापउपलब्धनिता RĪGĀ-TAN. 5, 52. व्यथा कार (act. und med.) Jmd (gen.) in Leid versetzen, Jmd Schmerzen verursachen HARIV. 12755. R. 5, 49, 25. Spr. (II) 1259. °कर (I) 2943. व्यथा मा कथाः गीतं दितं नितं dem Schmerz hin (II) 867. न व्यथा कर्त्तवा R. 3, 73, 17. मनसः R. SCHL. 2, 63, 48. मानसी AK. 1, 1, 2, 28. कृदि so v. a. Herz klopfen Suçr. 2, 402, 2. कृदपे 514, 7. कृदया VIKR. 8, 29. कृदप° Seelenschmerz Spr. (II) 1700. अङ्ग° Kāñi-sañ. 6, 8. मर्म° Git. 3, 14. RĪGĀ-TAN. 3, 277. शीर्ष° Kopfschmerz 4, 14. किं कर्मस्य भव्यथा न वपुषि Spr. (II) 1737. गर्भवास° 2093. निस्तीर्य दौर्दव्यथाम् RAGH. 3, 7. तद्विप्रेग° (pl.) Megh. 107. Spr. (II) 788. अथय्य sich nicht dem Schmerz hingebend, nicht versagend (I) 5008. सव्यथ sich dem Schmerz hingebend, bekümmert ÇAT. 9, 82. HIT. 113, 12. — Vgl. अ-व्यथ, निर्व्यथ.

व्यथि (wie oben) a. अ°.

व्यथितं 1) adj. a. u. व्यथ्. — 2) n. Schaden oder das Zagen VS. 5, 9.

व्यथिन् व्यथिष und व्यथिष्ये (von व्यथ् a. अ°).

व्यथिस् (wie oben) adv. 1) *schwankend, schief*: नैनं पूर्णां तरति व्यथिर्पति RV. 5, 59, 2. — 2) *heimlich, unbemerkt von (gen.)*; heimtückisch, Hinterücks: मार्किष्ठे व्यथिरा दधर्षति RV. 4, 4, 2. नासाममित्रो व्यथिरा दधर्षति 6, 38, 2. व्यथिर्दामुषो मर्त्यस्य 62, 2. पश्चिद्धि ते अपि व्यथिर्गन्धर्वो धर्मन्महि 8, 45, 19. परा कीन्द्वा धावसि वृषाकपिर्न व्यथिः 18, 86, 2. 31, 10. Hierher auch पुरा यथा व्यथिः अन् इन्द्रस्य नाधुषे शवः AV. 6, 33, 2. wozu RV. 6, 28, 2 zu vergleichen und व्यथिः शवः zu vermuthen ist. — Vgl. कृच्छ°.

व्यथ्य (vom caus. von व्यथ्) adj. a. अ°.

व्यथ्ययः irrig v. l. für अव्यथयः Nāg. 1, 14.

व्यथरं (von 1. अद् mit वि) adj. nagend, m. Nagethier ÇAT. Br. 7, 4, 27. व्यथरो AV. 3, 28, 2. Richtig wäre wohl व्यथर.

व्यथ्, विध्यति Dhīrup. 26, 72 (ताडने). P. 6, 1, 16. विव्याथ 17. Vop. 8, 124, 11, 2. विविधतुम् 11, 3. विविधत्, अयात्सीत्, उपविधन्, वेत्स्यामि (vgl. KĀR. 4 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10). वेदा, विद्वा, विध्य, वेदुम्; pass. विध्यते, विद्धे. Hier und da aus metrischen Rücksichten auch med. 1) durchbohren, durchstoßen; erschliessen, treffen (mit einem Geschosse) RV. 1, 61, 7. 86, 9. तपुषाम्ना 2, 30, 4. 9. 4, 4, 1. तमस्तां विध्य शर्वा शिशानः 18, 87, 6. AV. 3, 25, 1. मर्मणि 5, 8, 9. VS. 16, 22. TS. 2, 2, 3, 4. 6, 8, 3. 6, 5, 2. तम-यायस्याविध्यत् AIT. Br. 3, 22. ÇAT. Br. 1, 7, 2, 2. विध्यत्यधनुषा P. 4, 4, 22. मृगजस्तानि MBH. 4, 142. उरसि 5, 7176. R. 3, 33, 12. 4, 8, 12. RAGH. 9, 60. अथैनमपरः कामस्तुष्टा विध्यति बाणवत् Spr. (II) 1646. (I) 2214. परादेनमतिवादाधार्मिणं विध्यत् 4509. KATĪA. 39, 61. 47, 82.